आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलोर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - Being Spiritually Minded and Earthly Wise)

आत्मिक मन से परिपूर्ण
और
पृथ्वी पर बुद्धिमान

विषय सूची

1.	परिचय	1
2.	मसीही जीवन में तनाव	3
3.	गलत चुनाव, गलतियाँ और उनके परिणाम	5
4.	इसलिए बुद्धिमान बनो	7
5.	आत्मिक परन्तु व्यवहारिक	8
6.	बुद्धि–हमारी सुरक्षा	11
7.	परमेश्वर की भलाई	13

1

परिचय

हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए सारी बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं, उनके लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं। परन्तु उन चुनावों, मूर्खतापूर्ण गलतियों, गलत तरीकों से बताए गए फैसलों, आलस्य के भंयकर परिणामों और ठीक से तैयारी के आभाव में होने वाले विनाशों के विषय में क्या है? उन बातों के विषय में क्या है जो एक मसीही करता है? उस मसीही के बारे में क्या है जो बहुत आत्मिक मन का है लेकिन अपने इस जीवन के विषय में अपने आपको शिक्षा देने में असफल रहा? उन बातों के विषय में क्या है जो एक मसीही की जिम्मेदारी के कारण उत्पन्न होती है? क्या परमेश्वर उन बातों को करता रहा है?

हम बहुत से मसीहियों को देखते हैं जो पीड़ा में हैं और न छूटने वाले जाल में फँसे हैं। हमारा धर्म-विज्ञान का अध्ययन यह बताता है कि परमेश्वर अपने लोगों को कठिन समयों में से होकर गुजारता है ताकि वे उससे लाभ उठाकर सामर्थी बन जाएं। परन्तु, क्या पीड़ाओं और कठिनाईयों के सारे अनुभव परमेश्वर की ओर से हैं?

यदि हम थोड़ा रुक कर इन बातों का विश्लेषण करें तब हम कुछ ऐसे निश्चित फैसलों और चुनावों को ढूँढ़ लेगे जिनके कारण हम ऐसी पीड़ाओं और कठिनाईयों में पड़े हैं। ये हमारे गलत फैसले-किसी भी रूप में क्यों न हों, उन मुसीबतों का कारण हैं जिनका हम सामना कर रहे हैं। क्या हम अपने अनुभवों को आत्मिक बना कर ऐसी पीड़ाओं के लिए परमेश्वर को जिम्मेदार ठहराएं? यह सत्य है कि हम सब, चूँकि अभी भी अपूर्ण है, गलतियाँ करते हैं। पहली बार मुसीबतों का सामना करते समय गलत फैसले ही इनके पीछे भयंकर परिणामों का कारण हो सकते हैं। कैसे हमारे गलत चुनाव उन योजनाओं को जो परमेश्वर ने हमारे लिए

बनाई हैं, प्रभावित करते हैं? क्या हमारी गलतियाँ हमारे जीवन में परमेश्वर की सर्वोत्तम और सर्वोच्च बातें पूरा होने से हमें पराजित अथवा बदलती हैं? यह पुस्तक हमें अपने मसीही व्यवहारिक जीवन में जगाने के लिए रची गई है। इसका उद्देश्य यह है कि हम अपनी एकमात्र जिम्मेदारी को समझें जो परमेश्वर की योजना हमारे जीवनों में पूरी होने के विषय में है। यह एक आवह्वान है कि हम अपने कामों को आत्मिक बनाना छोड़कर उनके लिए स्वयं जिम्मेदारी लें। यह एक प्रोत्साहन है कि हम इस जीवन की बातों के विषय में "बुद्धिमान" बनें।

हम कुछ ऐसे निश्चित फैसलों और चुनावों को ढूँढ़ लेने जिनके कारण हम ऐसी पीड़ाओं और कठिनाईयों में पड़े हैं।

2

मसीही जीवन में तनाव

"अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ" (कुलुस्सियों 3:1,2)।

ऐसा प्रतीत होता है कि एक मसीही के जीवन में लगातार तनाव बना रहता है जब वह "पहले परमेश्वर के राज्य की खोज" करता है, जब ऐसे लोगों के बीच में रहता है जो परमेश्वर के राज्य के बिल्कुल उलटा है। हम इस पृथ्वी पर हैं, परन्तु हमें ऊपर की बातों की खोजना है, स्वर्ग की बातों को पृथ्वी पर रहते हुए हमारी यह महान जिम्मेदारी बनती है कि हम अपना भविष्य बनाएं, "कुछ" बनें, सफलता प्राप्त करें, धन इकठ्ठा करें और इन सब बातों के बाद भी हमें यह बताया गया है कि हम अपना मन, अपना प्रेम, अपनी रुचि, अपनी इच्छाएं, अपने प्रयास–ऊपर की बातों पर लगाऐं!! यदि कोई वास्तविक चुनौती मनुष्य के सामने है तो वह है आत्मिक, मानसिक और भावनात्मक क्षमताएं जो मनुष्य को खींचती रहती हैं। यह बिल्कुल ऐसा ही है। परन्तु फिर भी, परमेश्वर हमें उस बात की चुनौती नहीं देगा जो पूरा करना असम्भव होगा। उसने हमें यह आज्ञा केवल इस लिए दी है कि उसे मालूम है कि हम यह कर पाएंगे–केवल हमारी क्षमता से नहीं, परन्तु उस सामर्थ से जो वह हमें देता है–ताकि हम इसे पूरा कर सकें। तौभी, अपने जीवन को इस आज्ञा में ढालना "तनाव" को लाना है जिसे प्रत्येक आत्मिक परिपक्व मसीही पहचानता है जो इस वास्तविक आत्मिक संसार में काम करता है।

प्रतिदिन के जीवन में असंख्य "बातें" ऐसी होती हैं जहाँ एक मसीही अपने आपको दो दिशाओं में "खिंचता" हुआ पाता है। उदाहरण के लिए, सच्ची सफलता का कौन–सा पैमाना है? अस्थाई सफलता

उपलब्धियों और धन की प्राप्ति के आधार पर आँकी जाती है जबकि परमेश्वर के राज्य में सफलता इस पैमाने से मापी जाती है कि एक व्यक्ति अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है कि नहीं। संसार में उपलब्धियाँ और धन प्राप्त करना गलत बात नहीं है, परन्तु परमेश्वर की उच्चतम् बुलाहट हमें इस उद्देश्य से बुलाती है, "जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा" (मत्ती 16:25)। अतः एक मसीही लगातार संघर्ष करता रहता है जब वह इन बातों के बिन्दु पर पहुँचता है जहाँ उसे फैसला करना पड़ता है कि कौन सा मार्ग चुने– वह मार्ग जहाँ उसे संसार के स्तर से अधिक सफलता मिलती है अथवा वह मार्ग जहाँ एक व्यक्ति की उन्नति परमेश्वर की मसीह में उच्चतम बुलाहट को पूरी करने से होती है।

इन बहुत से संघर्षों के अलावा एक मसीही को अपने जीवन की यात्रा में और शैतान के साथ सन्तोष करना पड़ता है। प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं कहा, "क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति-व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं" (लूका 16:8)। ऐसा नहीं होना चाहिए, परन्तु कभी-कभी ऐसा ही होता है, विशेषकर उस समय जब ज्योति की सन्तान उस स्वर्गीय बुद्धि को पकड़े नहीं रहते जो पिता ने उनके लिए उपलब्ध कराई है। एक मसीही को बहुत-सी बातों में संसार की सन्तान के साथ अपने प्रतिदिन के क्रिया-कलापों में प्रतिस्पर्धा करना, काम करना और उससे मिलान करना सीखना चाहिए। एक मसीही अपने विरोधी की युक्तियों का भी निशाना बना रहता है। शैतान एक मसीही को परीक्षा और कष्टों में डालने में आनन्दित होता है ताकि वह उसे परमेश्वर की उच्चतम और सर्वोत्तम बातों से दूर कर सके।

> प्रतिदिन के जीवन में असंख्य "बातें" ऐसी होती हैं जहाँ एक मसीही अपने आपको दो दिशाओं में "खिंचता" हुआ पाता है।

3

गलत चुनाव, गलतियाँ और उनके परिणाम

"धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्टों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा (गलातियों 6:7,8)।

इन तनावों और अन्य बातों के बीच संसार के दवावों और शैतान की परीक्षाओं को जोड़कर, एक मसीही के लिए यह सम्भव है कि वह गलती करे। यह लगभग आशाहीन और नकारात्मक बात लगती है, फिर भी यह सच है कि हम जीवन में कभी-कभी गलत चुनाव और बुरे फैसले करते हैं। बहुत से विश्वासियों के विषय में सोचिये जिन्होंने समझौता करके अपने जीवन साथी का चुनाव किया। शिक्षा, भविष्य, रहने के स्थान, मित्रों, धन का उपयोग, आदतों आदि के विषय में किए गए बहुत से फैसलों के विषय में सोचिए। जैसे एक व्यक्ति अपनी स्वर्गीय बुलाहट को पूरा करने का प्रयास करता है, बहुत सी बातें गम्भीर बन जाती हैं क्योंकि वह व्यक्ति अब सोचने लगता है कि प्रत्येक फैसला-कहाँ, कब, क्या और कैसे, किस प्रकार हो। उसके जीवन की प्रत्येक बात से इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य पर असर पड़ता है। हमारे सभी फैसलों का परिणाम होता है। हममें से कुछ लोग इस बात की गम्भीरता को नहीं समझते हैं। यह जानते हुए कि हमारा परमेश्वर अनुग्रहकारी है हम जानबूझकर और अनजाने में इसका "फायदा" उठाते हैं। जी हाँ, परमेश्वर के राज्य में सब कुछ अनुग्रह ही से है, परन्तु परमेश्वर ने कुछ जिम्मेदारी हम पर रखी है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन सत्यों के अनुसार जीएं जो हमें सिखाए गए हैं। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम सभी कामों को परिश्रमी होकर करें और आलस्य को त्याग दें। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम संसार और शरीर के कामों

और परीक्षाओं को झिड़कें। ये कुछ बातें हैं जो परमेश्वर हमारे लिए नहीं करेगा। वह हमें बुद्धि देगा। (यदि हम इसके लिए उसे खोजेंगे), परन्तु फिर भी फैसला करना हमारे हाथ में है और हमें प्रत्येक फैसले के परिणामों को झेलने के लिए तैयार रहना चाहिए।

परमेश्वर के राज्य में सब कुछ अनुग्रह ही से है, परन्तु परमेश्वर ने कुछ जिम्मेदारी हम पर रखी है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन सत्यों के अनुसार जीएं जो हमें सिखाए गए हैं।

4

इसलिए बुद्धिमान बनो

"देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ, इसलिये साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो" (मत्ती 10:16)

भेड़ें–परमेश्वर के लोग–विशेषकर अनुकूल वातावरण में नहीं हैं। इसके विषय में चेतावनी देते हुए प्रभु यीशु ने हमें निर्देश दिया है कि "तुम साँपों के तरह चालाक और कबूतर की नाई भोले बनो" यद्यपि संसार शत्रु और दुष्ट बन सकता है, हम इसकी तरह बुरे नहीं बन सकते। बल्कि हमें "भलाई से बुराई को जीतना है" (रोमियों 12:21)। हमें मसीह के अनुग्रह और गुणों में चलना है। यीशु का यही अर्थ था जब उसने कहा कि तुम इस दुष्ट संसार में कबूतर की नाई भोले बनो। यीशु का दूसरा आदेश था कि हम साँपों की तरह बुद्धिमान बनें। हमें इस संसार में बुद्धिमान और समझदार बनना है। हमें अपनी आत्मिकता को बुद्धि और समझ के साथ मिलाना है विशेषकर जब हम इस जीवन की बातों का फैसला करते हैं। बल्कि बहुत से लोग आत्मिक मन से परिपूर्ण लोगों से नफरत करते हैं और उनका आदर नहीं करते। अतः हमें बुद्धि की आवश्यकता है यदि हम इस संसार में जीना और विजयी होना चाहते हैं।

साँप की तरह चालाक और कबूतर की नाई भोले बनो।

5

आत्मिक तौभी व्यवहारिक

आत्मिक होना अच्छा और बहुत महत्वपूर्ण है, परन्तु यह भी आवश्यक है कि हम व्यवहारिक हो। केवल आत्मिक होना इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करना और उसके लिए अधिक फल लाने में सफलता का निश्चय नहीं है। एक व्यक्ति को आत्मिकता के साथ व्यवहारिक बुद्धि और समझ को मिलाना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, केवल इसलिए कि आप मसीही है, यह गारण्टी नहीं है कि आपका विवाह सफल होगा। आपको विवाह और परिवार से सम्बन्धित व्यवहारिक समझ की आवश्यकता होगी और इस समझ को एक सुखी परिवार बनाने के लिए लागू करने की आवश्यकता होगी। इसी प्रकार, इतना ही काफी नहीं है कि आप दशमांश और भेटें दें और आप आशा करें कि आप आर्थिकरूप से सम्पन्न बनें। इसके अतिरिक्त, आपको सीखना होगा कि आप अपना बाकी पैसा बुद्धिमानी के साथ कैसे उपयोग करें।

केवल इसलिए कि आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर अपनी सन्तान को चंगा करता है और उन्हें स्वर्गीय स्वास्थ्य से आशीषित करता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप अपने खाने-पीने की आदतों में अनुशासन हीनता बरतें और अपने शरीर से आवश्यकता से अधिक काम लें। परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे अपने शरीरों की देखभाल करने में सावधानी बरतें। आखिरकार यह परमेश्वर का मन्दिर है। केवल इसलिए आप जानते हैं कि परमेश्वर ने आपके जीवन में बुलाहट रखी है, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप बिना मतलब के इधर-उधर घूमते रहें, और फिर भी यह आशा करें कि जो कुछ परमेश्वर ने आपके लिए योजना बनाई है वह पूरी होगी। दूसरी ओर, आपको अपने

आपको तैयार करने, प्रशिक्षित करने और सुसज्जित करने हेतु परिश्रम करना होगा और कदम से कदम मिलाकर परमेश्वर के साथ चलना होगा ताकि आपके जीवन में उसकी बुलाहट पूरी हो सके।

वे लोग जो मसीही सेवा में हैं उनके लिए केवल यही आवश्यक नहीं कि वे पूर्णरुप से अभिषिक्त हों ताकि इस पृथ्वी पर प्रभावशाली बनें। बल्कि उन्हें यह सीखने की आवश्यकता है कि वे कैसे अपने सेवा के प्रयासों को संगठित, समायोजित और उपयुक्त मार्ग में निर्देशित करते हैं ताकि वे परमेश्वर के लिए एक विध्वंसकारी शक्ति बनें। यह सत्य है कि शैतान के जुओं को अभिषेक ही तोड़ता है और लोगों के जीवनों से बोझ हटाता है, परन्तु यह भी सत्य है कि कुप्रबन्ध और ठीक से न किया गया संगठन बहुत से लोगों को उनके अभिषेक को बढ़ाने और उनके जीवनों को प्रभावित करने में रुकावट होता है।

कभी-कभी हम ऐसा प्रकट करते हैं कि मानो हम परमेश्वर से भी अधिक बुद्धिमान हैं। हम कभी-कभी इतने आत्मिक बन जाते हैं कि संसार के प्रयोग में नहीं आ पाते। मैं यह मानता हूँ कि ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर को भी कठिनाई होती है कि वह हमसे अपने राज्य के लिए कुछ करवा सके। एक समय था जब मैंने बहुत से दिन इस बात पर सोचने में बिताए कि क्या हमारे काम परमेश्वर की योजना को हमारे जीवन में पूरा होने में प्रभाव डालते हैं। यह बहुत अच्छा समय था। एक तरफ तो मैं जानता था कि प्रभु सर्वसत्ता सम्पन्न है और उसकी योजनाएं कभी असफल नहीं होती है। “मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती” (अय्यूब 42:2)। तौभी दूसरी तरफ, हम सम्पूर्ण बाइबल में देखते हैं कि परमेश्वर को अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए मानवीय आज्ञाकारिता और सहयोग की आवश्यकता होती है। एक सामान्य “सार्वभौमिक” स्तर पर परमेश्वर वह सब कुछ करना चाहता है जो उसने मानवजाति के लिए तैयार किया है। परन्तु व्यक्तिगत स्तर पर, हमारे कार्य परमेश्वर की

योजनाओं को हमारे जीवन में प्रकट होने और पूरा होने में प्रभाव डालते हैं। यह एक दुख की बात है कि बहुत से मसीही लोग अपने कामों के कारण परमेश्वर की सर्वोच्च और सर्वोत्तम योजना को पूरा नहीं होने देते।

> हमें अपने आपको सुसज्जित करना होगा और कदम से कदम मिलाकर परमेश्वर के साथ चलना होगा ताकि हमारे जीवन में उसकी बुलाहट पूरी हो सके।

6

बुद्धि हमारी सुरक्षा

"तौभी पराक्रम से बुद्धि उत्तम है...लड़ाई के हथियारों से बुद्धि उत्तम है...परन्तु सफल होने के लिये बुद्धि से लाभ होता है" (सभोपदेशक 9:16,18; 10:10)।

"बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिये उसकी प्राप्ति के लिये यत्न कर; जो कुछ तू प्राप्त करे उसे प्राप्त तो कर परन्तु समझ की प्राप्ति का यत्न घटने न पाए। उसकी बड़ाई कर, वह तुझ को बढ़ाएगी; जब तू उससे लिपट जाए, तब वह तेरी महिमा करेगी" (नीतिवचन 4:7,8)।

जैसे-जैसे मैं इस बात पर लगातार सोचता रहा, मुझे ऐसी बहुत-सी घटनाऐं याद हैं जहाँ मैंने गलतियाँ कीं। क्या होता यदि मैं और कठिन परिश्रम करता? क्या होता यदि मैं उसे न चुनकर इसे चुनता? क्या होता यदि मैं दूसरी बात की अपेक्षा अपना समय और शक्ति इस पर लगता? क्या हालात कुछ बदले हुए होते यदि मेरे पास आवश्यक सूचना और जानकारी होती? यदि मैं और बेहतर जानता होता? मैं अपनी कठिनाईयों और विपत्तियों से बच सकता था जिनको मैंने अपने कामों के कारण सहन किया था। मैंने इन बातों पर विचार किया तो मैं केवल इतना कर सका कि मैं पिता के सम्मुख पुकार उठा और प्रार्थना की कि मैं उसकी सर्वोच्च और सर्वोत्तम इच्छा को अपने जीवन में खोना नहीं चाहता हूँ। मैं अब यह भी गम्भीरता से सीख रहा था कि मेरे लिए बुद्धिमत्तापूर्ण फैसले लेना कितना महत्वपूर्ण है। बुद्धि हमारी सुरक्षा है। जब हम बुद्धिमानी से चलते हैं तो सुरक्षित रहते हैं। धर्मशास्त्र हमें बताता है, "जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है। क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है" (सभोपदेशक 8:5,6)। प्रत्येक बात का एक सही समय होता है। बुद्धि को मालूम है क्या, कैसे और कब करना है, एक विशेष परिस्थिति में क्या सही है।

परमेश्वर का वचन कहता है, "अपने पाँव रखने के लिये मार्ग को समतल कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें"(नीतिवचन 4:26)। दूसरे शब्दों में, रुक कर दो बार या तीन बार सोचें उन फैसलों के बारे में जो आप करने जा रहे हैं। बहुत बार बुद्धिमानी के फैसलों को करने के लिए हमें सूचना की आवश्यकता पड़ती है ताकि उस विशेष बात के लिए हम अधिक ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकें। इससे हमें लाभ होगा यदि उन बातों के विषय में हम उनसे सलाह लें जो उस विशेष क्षेत्र में हमसे ज्यादा जानते हैं। इसीलिए वचन कहता है, "बुद्धिमान पुरुष बलवान् भी होता है, और ज्ञानी जन अधिक शक्तिमान् होता है। इसलिये जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मंत्रियों के द्वारा प्राप्त होती है" (नीतिवचन 24:5,6)। हमें अपने आपको इतना आत्मिक नहीं समझना चाहिए कि हमें दूसरों से सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है।

सेवा में वरदान और अभिषेक बहुत महत्वपूर्ण हैं। तौभी उनका अधिकतम् प्रयोग करने और लम्बे समय तक प्रभाव रखने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने वरदानों और अभिषेक में अच्छे अगुवे की दक्षता, अच्छा संगठन, कठिन परिश्रम, अनुशासन लगातार उन्नति और परमेश्वर की बहुत बुद्धि को जोड़ दें।

> बुद्धि हमारी सुरक्षा है। जब हम बुद्धिमानी से चलते हैं तो सुरक्षित रहते हैं।

7

परमेश्वर की भलाई

"तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा" (नीतिवचन 3:5,6)।

तौभी हमारा सर्वसत्ता सम्पन्न परमेश्वर भला और दयालु प्रभु है। वह एक छोटी चिड़िया को भी नहीं भूलता है। यहाँ तक कि हमारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं (लूका 12:6,7)। अपनी सर्व-सत्तासम्पन्नता में वह हमारे प्रतिदिन के कामों में सलंग्न हो जाता है। वह हमसे केवल इतना चाहता है कि हम उस पर विश्वास करें और उसे स्वीकार करें और उसने प्रतिज्ञा की है कि वह हमारे कदमों को निर्देशित करेगा। जी हाँ, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम जीवन की बहुत सारी बात में बुद्धि और समझ की खोज करें। यदि हम ऐसा करेंगे तो हमारे कदम परमेश्वर निर्देशित करेगा। "मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है" (भजनसंहिता 37:23)। परमेश्वर हमारे जीवनों में ऐसी घटनाओं को आने देगा जो हमें उन कामों की ओर ले जाएंगी जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए नियुक्त किया है। इस प्रक्रिया में यदि हम फिर भी गलती करते हैं, लड़खड़ाते अथवा गिर जाते हैं, हम पूरी रीति से नाश नहीं होंगे क्योंकि प्रभु हमें उठाए रहता है। यहीं हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के सपनों का अन्त नहीं है। "यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह, और वह तुझे बढ़ाकर पृथ्वी का अधिकारी कर देगा; जब दुष्ट काट डाले जाएँगे, तब तू देखेगा" (भजनसंहिता 37:34)। वह हमें हमारे पाँवों के बल खड़ा करेगा और यात्रा पर पुनः चलाएगा। इस बात के लिए परमेश्वर की प्रशंसा करें!

“मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी। उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से ऊबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है। उसने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे” (भजनसंहिता 40:1–3)।

भजनकार दाऊद ने पाया कि वह “गहरे गड्ढे” में पड़ा है, उसके पैर “दलदल” में फँस गए थे। इस मुसीबत में पड़ने के बहुत से कारण हो सकते हैं। परन्तु उसने कहा कि जैसे वह धैर्य रखकर परमेश्वर की बाट जोहता रहा परमेश्वर ने उसकी पुकार सुन ली और उसे गड़ढे से निकाल लिया और उसके पैरों को स्थिर किया (भजनसंहिता 40:1–3)। हाल्लेलूय्याह! यह परमेश्वर की भलाई है। यहि हम गलती कर देते हैं और भयानक गड़ढे में गिर जाते हैं, प्रभु इस योग्य है कि वह हमें गड़ढे से बाहर निकाल लेता है और चट्टान पर खड़ा कर देता है। हमारी गलतियाँ हमें दर्द दे सकती हैं। हमारे आधे फैसले देरी करा सकते हैं। हमारी असफलताऐं हमें हमारे मार्ग से विचलित कर सकती हैं। परन्तु जब तक हम प्रभु को पकड़े रहेंगे। वह हमें तब भी इस योग्य करेगा कि हम अपने जीवन में उसकी योजना पूरी कर सकें। परमेश्वर हमारी असफलताओं से बड़ा है। वह हमारी गलतियों से भी बड़ा है। यदि हम अपनी गलतियों से सीखते हैं, बुद्धिमान बनते हैं और लगातार अपनी दौड़ दौड़ते हैं, परमेश्वर हमें अन्तिम मंजिल तक पहुँचाएगा। यह परमेश्वर ही है जो हमारे दुख को आनन्द में बदल देता है। “तूने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला; तू ने मेरा टाट उतरवा कर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बाँधा है” (भजनसंहिता 30:11)। वह परिस्थितियों को बदलने के योग्य है, वह बुरी बातों को सुन्दर बातों में बदल सकता है। वह हमारी निराशाओं को स्वर्गीय नियति में बदल देता है। परमेश्वर समय से बड़ा है। “जिन वर्षों की उपज अर्बे नामक टिड्डियों, और येलेक, और हासील ने, और गाजाम नामक टिड्डियों ने, अर्थात् मेरे बड़े दल ने

जिसको मैंने तुम्हारे बीच भेजा, खा ली थी, मैं उसकी हानि तुम को भर दूँगा" (योएल 2:25)। उसे मालूम है कि वह समय जो हमने अपनी गलतियों के कारण खो दिया है किस प्रकार हमें वापस दिला सकता है।

हमारे आधे फैसले देरी करा सकते हैं। हमारी असफलताऐं हमें हमारे मार्ग से विचलित कर सकती हैं। परन्तु जब तक हम प्रभु को पकड़े रहेंगे। वह हमें तब भी इस योग्य करेगा कि हम अपने जीवन में उसकी योजना पूरी कर सकें।

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ऑण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

यह सत्य है कि हम सब चूँकि अभी भी अपूर्ण हैं, गलतियाँ करते हैं। पहली बार मुसीबतों का सामना करते समय गलत फैसले ही इनके पीछे भयंकर परिणामों का कारण हो सकते हैं। कैसे हमारे गलत चुनाव उन योजनाओं को जो परमेश्वर ने हमारे लिए बनाई हैं, प्रभावित करते हैं? क्या हमारी गलतियाँ हमारे जीवन में परमेश्वर की सर्वोत्तम और उच्चतम बातें पूरा होने से हमें पराजित अथवा बदलती हैं? यह पुस्तक हमें अपने मसीही व्यवहारिक जीवन में जगाने के लिए रची गई है। इसका उद्देश्य यह है कि हम अपनी एकमात्र जिम्मेदारी को समझें जो परमेश्वर की योजना हमारे जीवनों में पूरी होने के विषय में है। यह एक आवह्वान है कि हम अपने कामों को आत्मिक बनाना छोड़कर उनके लिए स्वयं जिम्मेदारी लें। यह एक प्रोत्साहन है कि हम इस जीवन की बातों के विषय में "बुद्धिमान" बनें।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org